# साम्प्रदायिकता का दर्द बयां करता 'तमस'

**रूबी त्रिपाठी**
सहायक प्राध्यापक (अतिथि संकाय)
हिन्दी विभाग,
आर्य कन्या डिग्री कालेज
(संघटक महाविद्यालय,इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
इलाहाबाद,उ0प्र0

भारत विभाजन के परिणामस्वरूप देश में होने वाले भीषण दंगों की करुण गाथा को प्रस्तुत करने वाला भीष्म साहनी का उपन्यास है –'तमस'। तमस के माध्यम से भीष्म साहनी स्पष्ट करना चाहते हैं कि साम्प्रदायिकता एक ऐसी आग है जो युगों से चलती आई आत्मीयता की भावना को एकाएक भष्म कर व्यक्ति को जातीयता के संकीर्ण सिकंजे में जकड़ देती है, और पीछे छोड़ जाती है एक न मिटने वाली त्रासद पीड़ा।

तमस (सन् 1973) की कथा किसी लेखक की विशुद्ध कल्पना नहीं है, बल्कि भारतीय इतिहास की एक सच्ची घटना है। वो वक्त हमारे इतिहास का एक दुःखद अध्याय था। लाखों बेगुनाह लोग अलग–अलग धर्मों को मानने वाला या तो मारे गये या बेघर हुए। हिन्दू, मुसलमान और सिक्खों के बीच घृणा, द्वेष, शक और क्षोभ फैलाकर उनके बीच फूट डालकर अपना राजनीतिक मकसद हासिल करने की कोशिश की गई थी और इसके परिणाम स्वरूप भीषण साम्प्रदायिक दंगे हुए थे। इन दंगों की आग में कलकत्ता, नौआखाली और पंजाब बुरी तरह जल उठे।

'तमस' साम्प्रदायिकता की आग में झुलसते हुए पंजाब का चित्रण है। भीष्म जी ने 'तमस' के परिवेश में पंजाब तथा उसके आस–पास के गांवों में हुए हिन्दू–मुस्लिम दंगों का चित्रण किया है। ये दंगे लगभग पांच–छः दिन तक रहे और इन्होंने जिले के सैकड़ों गावों को अपनी लपेट में ले लिया था। वह पांच छः दिन का समय ही 'तमस' उपन्यास का घटना काल है। साम्प्रदायिक दंगे किस प्रकार बढ़ते हैं, उसमें गहमा–गहमी किस प्रकार आती है, अफवाहें किस प्रकार तूल पकड़ती हैं, वातावरण किस प्रकार गहराते हुए भयंकर विभीषिका का रूप धारण करता है और अन्त में कैसे दबाया जाता है इन तमाम सन्दर्भों को लेखक ने समग्रता के साथ पाठकों के समक्ष रखा है। 'तमस' की घटनाओं के साथ लेखक का निजी सम्बन्ध भी रहा है। भीष्म जी ने 'तमस' संस्करण में लिखा है कि ''उस जमाने को निकट से देखने का मुझे अवसर मिला है। नावेल में दिये गए अनेक प्रसंग ऐसे भी हैं जिनका मैं स्वयं साक्षी हूं। शहर में जब तनाव बढ़ रहा था, और नागरिकों का एक समूह अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर से मिलने गया तो मैं भी उनके साथ हो लिया था। कुएँ में अपने बच्चों को लेकर कूद जाने वाली औरतों की घटना सच्ची है, लाशों से अटा कुआँ मैंने दंगों के बाद अपनी आंखों से देखा है।''[1] दंगों के बाद हजारों की संख्या में लोग अपने–अपने गाँव छोड़कर रावलपिंडी की ओर आ

गए थे। मैंने वे काफिले देखे हैं। रावलपिण्डी के अस्पतालों में पड़े सैकड़ों जख्मी लोग भी देखे हैं, कौन कैसे जख्मी हुआ, उसके गांव में क्या हुआ, कैसे दंगा हुआ, हुआ भी या नहीं, यह उन लोगों के मुंह से सुनने का मौका मिला।[2] इस प्रक्रिया में में तत्कालीन समय में व्याप्त अंग्रेजों की कूटनीति का पर्दाफास और कांग्रेस तथा विभिन्न राजनीतिक दलों की भूमिका भी स्पष्ट करते हैं। इसके साथ–साथ वे उन सामाजिक, आर्थिक कारणों पर भी विचार करते हैं जिसने विशाल जनसमुदाय को शरणार्थी बना दिया।

यह वह समय था जब कैबिनेट मिशन की योजना के अनुसार केन्द्र में अंतरिम सरकार बन चुकी थी। पं. नेहरू इस सरकार के प्रमुख थे। भारत को आजादी मिलने ही वाली थी। अंग्रेज यह समझ चुके थे कि अब एक दिन हमें यह देश छोड़ना होगा। निश्चित रूप से यह बात तय है कि जब सत्ता छिनती है, तब तूफान उठ खड़ा होता है। सन् 1942 के देश–व्यापी 'भारत–छोड़ो आन्दोलन' के बाद स्वतंत्रता संघर्ष की रीढ़ तोड़ने का यह षड्यन्त्र था और अंग्रेजों के हाथ में साम्प्रदायिकता का हथियार ही सबसे बड़ा हथियार था। उन्होंने 'डिवाइड एण्ड रूल' (फूट डालो और राज करो) की नीति अपनाकर आजादी के लिए लड़ते हिन्दू–मुसलमानों के बीच वैमनस्य पैदा किया। मुसलमान शासकों द्वारा किए गए अन्याय और धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप का दुःख समान्य भारतीय जनता जब भूलने लगी थी और धार्मिक भेद–भाव के बावजूद जब परस्पर सौहार्द्र के रिश्ते कायम होने लगे थे, तभी अंग्रेजों की राजनीति ने वैमनस्य के बीज उगाने शुरू कर दिए थे। वैमनस्य के इन बीजों के अंकुरित होने और द्विखण्डित भारत का कटु फल तैयार होने की प्रक्रिया में परस्पर के प्रति ईर्ष्या, शंका, डर आदि भावों के साथ दूसरे की सम्पत्ति सहज में लूटने की स्वार्थी और लोभी वृत्ति ने भी कम हाथ नहीं बटाया। 'तमस' इसी विषय को लेकर चलता है।

यहां तत्कालीन यथार्थ जिस बारीकी और संयोग के साथ व्यक्त हुआ है उसकी मिसाल अन्यत्र बहुत कम देखने को मिलती है। धर्म, इतिहास, संस्कृति और राजनीति के अनेक कोणों से साम्प्रदायिकता को समझने की कोशिश की गयी है। दरअसल, साम्प्रदायिकता बीसवी सदी की परिघटना है, जो अंग्रेजी राज के दौरान पैदा हुई थी। विभिन्न सम्प्रदायों में धार्मिक–सांस्कृतिक स्तर पर अनेक भिन्नताएं होते हुए भी घृणा और हिंसा का ऐसा वीभत्स और बर्बर दृश्य पहले कभी देखने को नहीं मिलता है। इतिहास गवाह है कि भारत में साम्प्रदायिक मनोवृत्ति उभारने में, हिन्दू–मुसलमानों के बीच वैमनस्य का बीज बोने में अंग्रेजों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऐसा उन्होंने अपने राजनीतिक हित में किया। यह उनकी बहुत बड़ी राजनीतिक चाल थी। 'डिवाइड एण्ड रूल'(फूट डालो और राज करो) का संकेत उपन्यास में डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड्स के द्वारा समय–समय पर निर्णय से स्पष्ट हो जाता है। जैसे–''हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन–सी

समानता पाई जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन–किन बातों में एक दूसरे से अलग हैं।''[3] अगर प्रजा आपस में लड़े तो शासक को किस बात का खतरा है।[4] यह देखना निहायत जरूरी था कि जनता का असन्तोष ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध न भड़के।[5] इस प्रकार से यह शक्ति दो धर्मों के तनाव को किसी भी स्तर पर कम नहीं करना चाहती थी। हां, काफी कुछ हो जाने के बाद बहुत कुछ करने का नाटक अलबत्ता वे जरूर करते थे। शहर के धार्मिक उन्माद तथा तनावपूर्ण वातावरण से भली–भांति परिचित होते हुए भी रिचर्डस विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं को नगर सुरक्षा का थोथा आश्वासन देता है। सरकार द्वारा शांति प्रयासों का ढोंग नगर में लूटपाट, हत्याएं, आगजनी तथा कर्फ्यू आदि से स्पष्ट हो जाता है।

अंग्रेज शासकों की योजनाओं को फलीभूत बनाने में चाटुकार लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु हिन्दू और मुसलमान दो सम्प्रदायों के बीच नफरत की दीवार खड़ी करने में तनिक भी संकोच नहीं करते। 'तमस' का मुरादअली अंग्रेजों की नीति का एक मोहरा है। वह नत्थू से यह कहकर सुअर मरवाता है कि सालोत्तरी साहब को डाक्टरी काम के लिए मरा हुआ सुअर चाहिए। दूसरे दिन वह सुअर मस्जिद की सीढ़ियों पर पड़ा मिलता है। मुरादअली सुअर के बदले गाय मारने के लिए लोगों को उकसाता है और दंगे शुरू हो जाते हैं। इस प्रकार से उपन्यास की शुरुआत ही शहर में साम्प्रदायिक दंगा कराने की पूर्वनिर्धारित योजना से होती है। यह बात शुरू से ही साफ हो जाती है कि दंगे कराने वाले लोग पर्दे के पीछे हैं और दंगे करने वाले आमन–सामने। यानी दंगा हो नहीं रहा है कराया जा रहा है, तनाव बढ़ नहीं रहा है बढ़ाया जा रहा है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मुराद अली मुसलमान है और इस्लाम के लिए मरने मारने वाले भी मुसलमान हैं। राजनीति किस धर्म का इस्तेमाल करती है इसे 'तमस' के मुरादअली के माध्यम से समझा जा सकता है। यहां प्रेमचन्द का यह कथन सार्थक जान पड़ता है कि ''साम्प्रदायिकता संस्कृति की दुहाई दिया करती है, उसे अपने असली रूप में निकलने में शायद लज्जा आती है इसलिए वह गधे की भांति जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल के जानवरों पर अपना रोब जमाता फिरता था, संस्कृति की खाल ओढ़कर आती है।''[6] इस तरह साम्प्रदायिक शक्तियां धर्म और संस्कृति की रक्षा के नाम पर समुदायों के बीच पायी जाने वाली असमानताओं को ही उभारती है।

भीष्म जी पंजाब के रहने वाले है इसलिए उनकी संवेदना और पंजाब की संवेदना मिलकर एकाकार हो गई। हिन्दू–मुस्लिम दंगे के बहाने आतंक और घबराहट, भय और सन्देह, दंगे और उत्पात के बची उन्होंने समूची पंजाबी जनता को लाकर खड़ा कर दिया है। पहली नजर में कोई यह नहीं समझ पाता कि आखिर यह क्या हो गया। सुअर मारकर मस्जिद की सीढ़ियों में रख देने का परिणाम अंग्रेजी हुकूमत अच्छी तरह से जानती थी। किन्तु अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में कुछ भी

करने में असमर्थ है। परिणाम यह निकलता है कि पलभर में चारों ओर धुंआ उठने लगता है और आग की लपटें जोर पकड़ने लगती है। कोई भी व्यक्ति निर्णय लेने की स्थिति में नहीं रहता। ऐसी त्रासद परिस्थिति का वर्णन करते हुए भीष्म जी लिखते हैं –''मुहल्लों के बीच लकीरें खिंच गई थी, हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की अब हिम्मत नहीं थीं, और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दू–सिख अब नहीं आ–जा सकते थे। आंखों में संशय और भय उतर आए थे। गलियों के सिरों पर, और सड़कों के नाकों पर जगह–जगह कुछ लोग हाथों में लाठियां और भाले लिए, छिपे बैठे थे।''[7] इस प्रकार वर्षों से चले आ रहे भाईचारे का रिश्ता रक्तपात में बदल गया।

विभाजन से जुड़े हुए समस्त संदर्भ, लेखक की विचारधारा के साथ विकसित होते हैं। चाहे स्वामी वानप्रस्थी जी का मजहबी संकीर्णता का प्रश्न हो, चाहे रिचर्ड की कूटनीति का, चाहे हरनामसिंह द्वारा अपना घर छोड़ने का प्रसंग हो, या भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य मोहन सिंह द्वारा दंगों को रोकने का प्रयास हो, सभी का विवेचन भीष्म जी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करते हैं और उसमें व्याप्त अन्तर्विरोधी स्थिति को उजागर करते हैं। समाज में वर्षों से साथ रहते आये हुए अलग–अलग धर्मों को मानने वाले लोगों का आचार विचार, रहन–सहन, रीति–रिवाज भावनाएं आदि के विस्तृत चित्र उभर कर आए हैं। साम्प्रदायिकता से झुलसते हुए यह उच्च, निम्न और मध्यम वर्ग के परिवारों के ये चित्र सम्पूर्ण सामाजिक वातावरण को सजीव रूप में पाठक के सामने उपस्थित कर देते हैं।

भीष्म जी की यह बहुत बड़ी विशेषता रहती है कि उन्होंने तत्कालीन अंग्रेज अधिकारियों की नीति का पर्दाफास अंग्रेज पात्रों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। सन् 1946–47 के बीच पंजाब सांप्रदायिकता की आग में जल रहा था। उस समय सत्ता तो अंग्रेजों के हाथ में थी फिर वे इसे रोक क्यों नहीं पा रहे थे? उनकी इसी खामोशी के मूल में उनकी प्रशासकीय फूट डालो और राज करो नीति ही थी। उपन्यास में इसी नीति का पर्दाफास किया है। जब दंगे समाप्त होने की स्थिति में होते तब ये अंग्रेज जनता के बीच अपना प्रभाव जमाने के लिए कर्फ्यू, कैम्प आदि लगाकर बहुत कुछ करने का नाटक करते हैं। इनकी इस तरह की हरकतों को देखकर मनोहरलाल से कहा गया यह आत्म कथन कितना सार्थक जान पड़ता है –''इन फसादों के लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार उस वक्त कहां थी जब शहर में तनाव बढ़ रहा था, अब कर्फ्यू लगाया गया है, उस वक्त क्यों नहीं लगाया गया? उस वक्त साहब बहादुर कहां थे?''[8] दंगा कराने वाला भी अंग्रेज, भूखों मारने वाला भी अंग्रेज, रोटी देने वाला भी अंग्रेज, घर से बेघर करने वाला भी अंग्रेज, घरों में बसाने वाला भी अंग्रेज।

उपन्यास की वर्तमान प्रासंगिकता यह है कि वह आजादी के पूर्व अंग्रेज हाकिमों की फूट पैदा करने वाली और इस आधार पर 'शांति व्यवस्था' के नाम पर अपने अस्तित्व को महसूस कराने वाली

नीति सम्बन्धी दोगली चालों की ओर संकेत करता हुआ साम्राज्यवादी ताकतों की मौजूदा भूमिका पर प्रश्न चिन्ह लगाता है। अंग्रेज हाकिम आज नहीं हैं तो क्या, साम्राज्यवादी ताकतें और उनके अभिकर्ता तो हैं। अंग्रेज हाकिम और उसके मुरादअली जैसे पिट्ठू की भूमिका के निर्वाह का दायित्व अब साम्राज्यवादी प्रतिगामी तत्वों ने अपने कन्धों पर ले लिया है। देश के भीतर और बाहर उनके हिमायतियों की कमी नहीं है। दूरदर्शन धारावाहिक तमस में दिए गए वक्तव्य में भीष्म जी ने कहा है कि ''स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी हम अपने समाज में से साम्प्रदायिक तत्वों को खतम नहीं कर पाए हैं। आज भी धार्मिक और जातीय दुर्भावना फैलाने वाले तत्व हमारे बीच सक्रिय हैं। 'तमस' का मकसद है –इन संकीर्ण साम्प्रदायिक तत्वों को समझना, इनकी साजिश को समझना, इन्हें बेनकाब करना।''[9]

विभाजन जैसी त्रासद ऐतिहासिक घटना को भीष्म जी ने नजदीक से देखा ही नहीं, भोगा भी है। इसलिए जिस परिवेश का ओर जिन स्थितियों का चित्रण किया है उनका निजी और निकट का परिचय है। इस कारण इस उपन्यास में एक आत्मीय और विश्वसनीयता भी मिलती है। लेखक के वर्णन इतने जीवन्त हैं कि स्थितियां सजीव हो जाती हैं–चाहे वह प्राकृतिक परिवेश का वर्णन हो या व्यक्ति की भीतरी हलचलों का। परिवेश की दृष्टि से 'तमस' एक प्रभावोत्पादक कृति बन पड़ी है।

**संदर्भ :**


1. सं0 साहनी भीष्म, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, पृ. 428
2. वहीं पृ0 428
3. साहनी भीष्म, तमस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 49
4. वहीं पृ. 254
5. आजकल सितम्बर, 1999, पृ. 31
6. भीष्म साहनी, तमस, पृ. 135
7. वहीं, पृ. 20
8. सं0 साहनी भीष्म, आधुनिक हिन्दी उपन्यास, पृ. 430
9. दूरदर्शन धारावाहिक 'तमस' में दिये गये वक्तव्य से।


**********